2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'भारत-दुर्दशा' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक के तत्त्वों के आधार पर ध्रुवस्वामिनी की समीक्षा कीजिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'सूखी डाली' का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'तीन अपाहिज' की समीक्षा कीजिए।

Morning

[This question paper contains 4 printed pages.]

Maitreyi College ★ LIBRARY ★ Chanakya Puri, New Delhi-110021

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 5255 **G**

28/12/2023

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिन्दी नाटक, एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई।

हा! हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई।।

सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो

सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।

अथवा

भारतकिरिनि जगत् उँजियारा ।
भारतजीव जिअत संसारा ।।
भारत वेदकथा इतिहास ।
भारत वेद प्रथा परकासा ।।

(ख) यह कसक अरे आंसू सह जा ।
बनकर विनम्र अभिमान मुझे
मेरा अस्तित्व बता, रह जा ।
बन प्रेम छलक कोने-कोने
अपनी नीरव गाथा कह जा
करुणा बन दुखिया वसुधा पर
शीतलता फैलाता बह जा ।

अथवा

रानी, तुम भी स्त्री हो। क्या स्त्री की व्यथा न समझोगी? आज तुम्हारी विजय का अंधकार तुम्हारे शाश्वत स्त्रीत्व को ढक ले, किन्तु सबके जीवन में एक बार प्रेम की दीपावली जलती है।

जली होगी अवश्य। तुम्हारे जीवन में वह आलोक का महोत्सव आया होगा, जिसमें हृदय, हृदय को पहचानने का प्रयत्न करता है, उदार बनता है और सर्वस्व दान करने का उत्साह रखता है। मुझे शकराज का शव चाहिए।

(ग) बकरी को क्या पता था
मरकर बन के रहेगी,
पानी भरेंगे लोग
और वह कुछ न कहेगी,
जा-जा के सींच आएगी
हर एक की क्यारी,
मर कर के भी बुझाएगी
वह प्यास तुम्हारी ।

अथवा

तब मैं स्वयं तलवार लेकर कुँवर की रक्षा करूँगी। भैरवी बनकर युद्ध करूँगी। मरते-मरते मैं उसकी तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगी। उसके और मेरे कुँवर के बीच में मेरे खून का समुद्र लहराएगा जिसे वह इस जीवन में पार भी न कर सकेगा।